योग से बनेंगे निर्विकारी

परमात्मा हमेशा से कहा करते हैं कि जब तक हम सम्पूर्ण पवित्र नहीं बनेंगे तब तक हम विश्व कल्याणकारी नहीं बन सकते। विश्व कल्याणकारी मात्र एक परमात्मा है, जिनको इसका दर्जा दिया जाता है। कारण, वो देहातीत है। मनुष्य तो प्रकृति अर्थात् देह के आकर्षण में है। इस आकर्षण में रहने के बाद कभी भी सम्पूर्ण निर्विकारीपन सोचा भी नहीं जा सकता। लेकिन यह संभव है यदि हम ये मान लें कि हम देह ही नहीं एक शक्तिशाली चेतन शक्ति हैं और बस यही हैं तो! आज हमें निर्विकारीपन लाने हेतु सोचना पड़ेगा।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान इतना सुलझा हुआ है कि इसे कोई भी समझ व धारण कर सकता है। लेकिन समझने की ताकत क्यों नहीं आती? क्योंकि हम पवित्र नहीं होना चाहते। अगर आप पवित्र होना ही नहीं चाहते तो इस ज्ञान को कैसे समझेंगे? क्योंकि यह सारा ज्ञान सिर्फ और सिर्फ पवित्रता के आधार से ही है। जो जितना पवित्र है वो उतना ही इस ज्ञान को समझता और धारण करता है। सबका समझने का लेवल अलग है। कुछ हैं जो समझते हैं, लेकिन धारण नहीं करते। जो भी धारण नहीं करते, उनको कुक्कड़ ज्ञानी कहा जाता है। कुक्कड़ ज्ञानी का अर्थ है- मुर्गे की तरह सबको जगाकर खुद सो जाना। इससे सिद्ध होता है कि धारणा बहुत ज़रूरी है। हमारी इस संस्था की एक खास बात है, जो धारणा युक्त है और सम्पूर्ण पवित्रता को फॉलो करता है, उसके वायब्रेशन्स सभी लोगों को नैचुरल रूप से मिल जाते हैं। अर्थात् जिसकी पवित्रता का लेवल जितना ऊंचा है उतना वो सुखदाई है। उसको शब्दों से कुछ बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ती। उसके वायब्रेशन्स नैचुरल काम करते हैं।

अगर मन्सा में थोड़ी भी नकारात्मकता या वैर या ईर्ष्या या घृणा है, तो आपकी पवित्रता का लेवल बहुत लो है। तभी हम जिस किसी को ज्ञान सुनाते हैं, लोग तुलनात्मक रूप से बात करते हैं। और कहते हैं कि आपने बड़ा अच्छा सुनाया, लेकिन वहाँ दादी जी आये थे तो उन्होंने ये बात सुनाई तो हमें बड़ा अच्छा फील हुआ था। अब आप बताओ फील क्यों हो रहा है? उस आत्मा ने मन के स्तर पर बहुत काम किया है। इसीलिए उसके मंसा में किसी के प्रति कोई ऐसा भाव नहीं है।

आप ऐसे सोच लो कि अगर आप परमात्मा के बच्चे हैं और परमात्मा का काम भी कर रहे हैं तो आपसे सभी संतुष्ट होने चाहिए क्योंकि आप परमात्मा का काम कर रहे हैं। यदि कोई असंतुष्ट है तो इसका मतलब यह हुआ कि हम प्रकृति से भी जुड़े हुए हैं अर्थात् स्थूल चीज़ों से हमारा गहरा कनेक्शन है। जिसका भी स्थूल चीज़ों से गहरा कनेक्शन होगा वो कभी भी निर्विकारी नहीं बन सकता। क्योंकि स्थूल चीज़ों से जुड़ने के बाद ही हम गलती करते हैं। देह ही हमको नीचे ले आती है। इसी देह और देह के सम्बन्धियों के आकर्षण से परमात्मा दूर करना चाहता है और इसी का अभ्यास हमारा सम्पूर्ण देवताई चरित्र है। इनका शरीर बहुत सुन्दर है, लेकिन शरीर में आकर्षण नहीं है, कारण उन्होंने देह को अहमियत नहीं दी, सिर्फ देह को चलाने वाली शक्ति को अहमियत दी।

इसीलिए निर्विकारी बनने के लिए हम सभी को देह को भूलने का एक छोटा सा अभ्यास ही तो करना है और जिसका ये वाला अभ्यास बढ़ता जायेगा वो उतना शक्तिशाली बनता जायेगा। सीधी-साधी प्रक्रिया है, लेकिन अभ्यास करना पड़ता है, इसलिए लोग दूर भागते हैं। जितना अभ्यास उतना वैराग्य और उतनी ही पवित्रता हमारे अंदर आती है।

इसलिए निर्विकारी बनने के लिए हमें राजयोग का अभ्यास निरंतर करते रहना है विधि पूर्वक। इस देह को भूलना ही तो है। इसीलिए परमात्मा कहते हैं कि अगर हमारे अंदर समझ आ गई तो उससे हमारे अंदर थोड़े गुण तो ज़रूर आ जायेंगे, लेकिन सम्पूर्ण बनने के लिए परमात्मा से अच्छी तरह से जुड़ना पड़ेगा, तभी हम सम्पूर्ण निर्विकारी बनेंगे।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

सेवार्थ मनायें हर उत्सव, दिखावे के लिए नहीं

मन की बात
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : परमात्मा का कहना है कि भले ज्ञान हो, फिर भी आपमें युक्ति नहीं है तो दो पैसे का भी ज्ञान नहीं है। इस युक्ति का मतलब क्या है और इसे कैसे हम अपने जीवन में लायें?

उत्तर : देखिए, युक्ति का अर्थ है यथार्थ तरीका। युक्ति से मुक्ति। किसी बड़ी समस्या से हम तत्काल मुक्त हो सकते हैं अगर हम ठीक विधि अपना लें। युक्ति माना ठीक से विधि अपना लेना। चाहे वो व्यावहारिक हो या कारोबार में हो, विधि से काम करते हैं, एक अच्छे ढ़ंग से काम करते हैं, तो हर जगह हम सफल होते हैं। लोग युक्ति को चालाकी मान लेते हैं। तो यहाँ ये सोच लेते हैं कि चालाकी तो अध्यात्म के विरूद्ध है। चालाकी नहीं एक यथार्थ तरीका। मान लो एक व्यक्ति किसी औरत का पति है और वो उसे भक्ति करने से रोकता है। वो उसे जाने ही नहीं देता मंदिर में। वो कहता, सब ढ़कोसला है, बेकार है, सब खाने कमाने के धन्धे हैं। अनेक बातें उससे कहता है और उसे परेशान करता है। अब उसने एक विधि अपना ली है कि जब मैं सुबह-सुबह ताज़ी-ताज़ी सब्जी लेने जाऊंगी तो 10 मिनट मंदिर में भी हो आऊंगी। अब जो उसको करना हो वो कर लेती है। ये विधि हो गई, ये युक्ति हो गई। ना ये चालाकी हुई, ना ये पाप हुआ लेकिन ये अपनी श्रेष्ठ इच्छा को पूर्ण करने का एक तरीका होता है।

प्रश्न : क्या लौकिक बर्थ डे मनाना चाहिए? या फिर सिर्फ अलौकिक ही मनाना चाहिए?

उत्तर : अब देखिए, बात तो छोटी सी है। अब अगर इससे कोई सेवा होती है और अपने को भी और सबको खुशी होती है तो इसमें कोई प्रॉब्लम भी नहीं है। सेवार्थ मान लो हम अपना लौकिक बर्थ डे अलौकिक ढ़ंग से, सादगी के साथ, बहनों को बुलायें, रिलेटिव्स को बुलायें, कुछ अच्छा प्रोग्राम कर लें जिससे उनको ईश्वरीय संदेश मिले, जिससे उनको जीने के लिए कुछ अच्छी बात मिले, तनाव मुक्त होने की विधि मिले। मान लो 50 लोगों को हमने बुला लिया है, खुशी का माहौल है, सभी कहेंगे कि बर्थ डे मनाना हो तो ऐसा मनाना चाहिए। करते हैं कई लोग ऐसा और अलौकिक तो मनाना ही चाहिए। उसमें भी यही विधि अपनानी चाहिए। इसका अर्थ ये बिल्कुल नहीं है कि हम कोई दिखावे के लिए या कोई देहभान की बात है ये नहीं, सेवा हमारा जहाँ मोटिव है कि सबको कुछ मिले हमसे। बर्थ डे तो हमारा है लेकिन सब हमारे बर्थ डे पर कुछ अच्छी चीज़ लेकर ही यहाँ से जायें। वो गिफ्ट लायेंगे, हम उनको कुछ ऐसी गिफ्ट दे दें, सुन्दर विचारों की, सुन्दर ज्ञान की, तो इसमें कुछ हर्जा नहीं है।

प्रश्न : मैं अपने मैनेजर से बहुत परेशान हूँ। मैं बहुत कोशिश करता हूँ कि मैं अच्छे से अच्छा कार्य करके दूँ लेकिन वो फिर भी कभी संतुष्ट नहीं होते। और मेरे प्रमोशन में भी ऐसा लगता है कि वो बाधा पैदा करते हैं। कैसे मैं उन्हें संतुष्ट करूँ जबकि वो हर कार्य के लिए मुझे रोकते हैं, टोकते हैं, तो मन कई बार उचाट सा हो जाता है कि मैं यहाँ रहूँ या फिर अपनी नौकरी ही बदल लूँ? क्या करना चाहिए?

उत्तर : हाँ ऐसा होता है कि ऐसे में गुस्सा आता है, बदले की भावना होती है। नैचुरली हर कोई आगे बढ़ना चाहता है। और जहाँ भी वो कार्यरत है वहाँ भी माहौल अच्छा हो, वो खुशी से जाये, अपने कार्य को खुशी से करके, एक संतुष्टता के साथ खुशी से घर वापस आये। हर व्यक्ति की यही अभिलाषा होती है। लेकिन कई अधिकारी ऐसे होते हैं कि वो ऐसा गलत व्यवहार कर देते हैं कि व्यक्ति काम भी बहुत अच्छा करता है लेकिन जब वो घर जा रहा है तो वो टेंशन और असंतोष लेकर घर जा रहा है। मैं उन सभी अधिकारियों को, मैनेजर्स को कहूंगा कि सब अपने साथियों को अपनी फैमिली समझें, उन्हें अपने बच्चे समझें, तब वो आपके लिए डबल काम करेंगे। और आप तो उनकी समस्याओं को हल करने वाले हो, वो आपको कोई समस्या देंगें नहीं। बहुत प्यार से कार्य लेना चाहिए। अब इनको जो कुछ करना है, वही विधि जिसकी हम चर्चा कर रहे थे कि सवेरे उठकर, क्योंकि इसमें क्या होता है वो मैनेजर अवश्य अपने घर से परेशान होगा। पत्नी से लड़ाई करके आता होगा, कोई विशेष टेंशन ऊपर वालों की उसके ऊपर भी होगी। तो मनुष्य अपनी टेंशन को ट्रांसफर कर दिया करते हैं। उसको जनरल मैनेजर ने डांटा होगा। और जो खिन्नता थी उसपे उतार देता है तो ये चलता है, दुनिया में ऐसे ही हो रहा है। तो आपको क्या करना चाहिए, देखिए जॉब छोड़ने की तो ज़रूरत नहीं है, उससे तो कठिनाइयां हो जाती हैं। इमोशनल होकर, जल्दबाज़ी में ऐसे कार्य छोड़ नहीं देने चाहिए। मनुष्यों को समस्याओं को फेस करने के लिए तैयार रहना चाहिए। एकदम हल्के हो जायें। ये जान गये ना कि उसका ऐसा संस्कार है, समझ लें इसी में मुझे जीना है, इसे मुझे ठीक करना है और अपने को इस तनाव से मुक्त रखना है, तनाव व परेशानियों में अपने को नहीं डालना है। ना कोई नेगेटिविटी हमें उस व्यक्ति के लिए रखनी है। सवेरे उठकर सात बार ये संकल्प करेंगे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और फिर उस व्यक्ति को आत्मा देखेंगे और आत्मा देखकर 5 से 7 मिनट गुड वायब्रेशन्स देंगे। योग के, मेडिटेशन के संकल्प करेंगे कि ये आत्मा बहुत अच्छी है। ये भी एक महान आत्मा है। ये भी भगवान का बच्चा है। ये मेरा गुड फ्रेन्ड है, मेरा सहयोगी है, आज से ये व्यक्ति मेरे से बहुत सुन्दर व्यवहार करेगा। उसको गुड वायब्रेशन्स जायेंगे और मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये अपनी नेगेटिविटी को खत्म कर देंगे। पहले ही दिन से आपको परिणाम मिलने लगेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'
24x7 Ad. Free Value Based Channel
Peace of Mind CHANNEL
TATA SKY 1065 | airtel digital TV 678 | VIDEOCON d2h 497 | dishtv 1087
+91 8104 777 111 | info@pmtv.in | www.pmtv.in

गया-झारखण्ड। सिटी एस.पी. अनिल कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शीला।

शिलॉन्ग-मेघालय। येशी सेरिंग,आई.ए.एस.,चीफ सेक्रेट्री,मेघालय सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।

अरेराज-बिहार। सोमेश्वर नाथ शिव मंदिर के महंत रविशंकर गिरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीना।